

अम्बे तू है जगदंबे काली । जय दुर्गे खप्परवाली ।

तेरे ही गुण गाये भारती । ओ मय्या हम सब उतारे तेरी आरती॥ धृ ॥

तेरे भक्त जनोपर माता भीड पडी है भारी ।

दानव दल पर टुट पडो माँ करके सिंह सवारी ।

सौ सौ सिंहोसे भी बलशाली । है दस भुजाओवाली ।

दुखियो के दुखडे निवारती । ओ मय्या हम सब उतारे तेरी आरती ।

अम्बे तू है जगदंबे काली॥ १ ॥

माँ बेटे का है इस जग में बडा ही निर्मल नाता ।

पूत कपूत सुने है पर ना माँता सुनी कुमाता ।

सबपे करुणा दर्शानेवाली । अमृत बरसानेवाली ।

दुखियो के दुखडे निवारती । ओ मय्या हम सब उतारे तेरी आरती ।

अम्बे तू है जगदंबे काली॥ २ ॥

नही माँगते धन और दौलत ना चांदी ना सोना ।

हम तो माँगे माँ तेरे मन मे एक छोटासा कोना ।

सबकी बिगडी बनानेवाली । लाज बचानेवाली ।

सतीयो के सत को संवारती । ओ मय्या हम सब पुकारे तेरी आरती ।

अम्बे तू है जगदंबे काली॥ ३ ॥